# मैत्री, प्रमोद, करुणा और मध्यस्थता

**प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़**

**पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान**

मैत्री, प्रमोद, करुणा और मध्यस्थता चार भावनाऐं हैं। जो व्यक्ति इसको जीवन में अपना लेता है वह धन्य हो जाता है। यह मानवता के लिए हितकारी है। जीवन में धारण करने से व्यक्ति में परिवर्तन आ जाता है। मैत्री का अर्थ है– मित्रता। सभी जीवों के साथ मैत्री का भाव रखना चाहिए–

**रहिमन धागा  प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय**

**टूटे पर फिर ना जुड़े, जुड़े गांठ पड़ जाय**

अभिमान को छोड़ने से सभी प्राणियों के साथ मैत्री हो जाती है। स्वयं सत्य खोजा और सत्य से मैत्री करो। सत्य ही ईश्वर है और ईश्वर ही सत्य है। सबको क्षमा करो और सबसे क्षमा लो, क्षमावीरों का आभूषण कहा गया है। क्षमा से वैर भाव समाप्त हो जाता है। कोई शत्रु नहीं रह जाता। चौरासी लाख जीव योनियों के सभी प्राणी मेरे समान हैं यह भावना रखनी चाहिए। एक ही आत्मा सभी प्राणियों में विराजमान है यह देखने वाला समदृष्टा होता है।

प्रमोद की भावना बहुत सुन्दर भावना है। किसी के उत्थानों को देखकर ईर्ष्या भाव नहीं होना चाहिए। उसके उत्थान और विकास को देखकर मन में प्रसन्नता होनी चाहिए। प्रमोद भावना का विकास करना चाहिए। इससे सकारात्मक विचार आते हैं। किसी के उत्थान को देखकर नकारात्मक विचार नहीं पालना चाहिए।

करुणा बहुत ही सुन्दर भाव है। करुणा के भाव से अहिंसा की भावना का विकास होता है। यदि एक चींटी भी पांव से दब जाती है तो करुणाशील व्यक्ति का हृदय दुःख से द्रवित हो जाता है। सभी प्राणियों में आत्मा को देखने वाला व्यक्ति करुणाशील होता है। यदि कोई दुःखी है तो उसे देखकर मन में करुणा की भावना जागृत हो जाती है। तीर्थंकर भगवान महावीर करुणाशील थे। भगवान बुद्ध का हृदय जब करुणा से द्रवित हो गया तो उन्होंने सब कुछ त्यागकर संन्यास धारण कर लिया था।

माध्यस्थ भावना का अर्थ है तटस्थ भाव धारण करना। समभाव रखना माध्यस्थ भाव है। प्रतिक्रिया विरति होनी चाहिए। मानव जीवन में प्रेम मैत्री और सद्भाव अच्छे गुण हैं। प्रेम स्वाभाविक होता है इसमें लेनदेन नहीं चलता। माता–पिता का पुत्र के प्रति गुरु का शिष्य के प्रति स्वाभाविक प्रेम होता है। बाल्यावस्था में माता अनेक कष्टों का सहकर पुत्र का लालन पालन करती है। इसी प्रकार पशुओं में भी प्रेम की यह परम्परा देखी जाती है। हरिणी अपने सद्योजात बच्चे के लिए सिंह का सामना करने के लिए भी तैयार रहती है। यद्यपि वह जानती है सिंह एक ही वार में उसका प्राण पखेरू नष्ट कर देगा। किन्तु अपने जीते वह अपने बच्चे की सुरक्षा करती रहती है। यह स्वाभाविक प्रेम है। पशुओ, पक्षियों, मानव सभी प्राणियों में अपने बच्चे के प्रति यह प्रेम देखा जाता है।

रामचरित मानस में शबरी का प्रसंग, केवट का प्रसंग स्वाभाविक प्रेम का उदाहरण है। शबरी जाति की भिलनी थी, किन्तु भगवान राम के चरणारबिन्द में उसका स्वाभाविक अनुराग था। वह सैदव राम–राम रटा करती थी उसे यह विश्वास था कि एक दिन भगवान राम उसके द्वार पर अवश्य आयेंगे। शबरी के प्रेम ने भगवान राम को आकर्षित किया। प्रेम में वह शक्ति होती है कि वह किसी को भी अपनी तरफ खींच लेता है।

इस समय विश्व में लगभग सात अरब जनसंख्या है। यदि सभी प्रेम का पाठ पढ़ ले तो आतंकवाद, भ्रष्टाचार, सम्प्रदायवाद, नक्सलवाद समाप्त हो जाये। जब प्रेम का नाता जुड़ता है तो कटुता अपने आप समाप्त हो जाती है। एक कहावत है– ''एक अनार सौ बिमार'' अर्थात् अनार में सौ बिमारियों को दूर करने की क्षमता रहती है। प्रेम भी इसी प्रकार का है। उसमें हजारों दुर्गुणों को दूर कर सद्गुण लाने की क्षमता है।

महाभारत के एक प्रसंग के अनुसार जब भगवान श्रीकृष्ण संधि का प्रस्ताव लेकर कौरव पक्ष में गये तो दुर्योधन ने भगवान श्रीकृष्ण का स्वागत करने के लिए मेवा मिष्ठान आदि का प्रबंध किया था, किन्तु भगवान श्रीकृष्ण ने उसका त्यागकर विदुर के घर केले का छिलका खाकर प्रसन्नता व्यक्त की। प्रेम में वह आकर्षण होता है कि वह बहुमूल्य चीजों को नहीं देखता। भगवान श्रीकृष्ण को देखकर विदुरानी प्रेम में इतना विहवल हो गई उनको यह ज्ञान ही नहीं

रहा कि भगवान को वह केला अर्पण कर रही है या केले का छिलका। भगवान श्रीकृष्ण ने विदुरानी के प्रेम को स्वीकार किया और दुर्योधन के अहंकार को त्याग दिया।

प्रेम सबसे बड़ा रसायन होता है। प्रेम के द्वारा लोग ईश्वर को प्राप्त कर लेते है। जब लक्ष्मण को शक्तिवाण लगा तो लक्ष्मण मूर्च्छित होकर गिर पड़े। सुखेन वैद्य ने कहा कि संजीवनी बूटी के द्वारा ही लक्ष्मण का प्राण वापस आ सकता है। यह बूटी हिमालय पर्वत पर ही मिलती है। हनुमान संजीवनी बूटी लाने जब हिमालय क्षेत्र में गये तो संजीवनी की पहचान न होने के कारण वह पूरे पर्वत को ही उखाड़कर ले आये और लक्ष्मण के प्राण की रक्षा हुई। परिवार में यदि कटुता हो तो उसे प्रेम से दूर करना चाहिए। बड़ों को प्रणाम करना, उनके अनुभव का लाभ लेना प्रेम से ही संभव है।